धर्मवीर जागनी रतन सरकार श्री के विचार

परमधाम में नन्दलाल नहीं हैं - सेवा पूजा में किसी किसी गोटे में भाई श्री परमानन्द जी की बनाई हुई आरती में लिखा है कि फूलन की सेज, फूलन की गलमाला। रतन सिंहासन बैठे नन्दलाला। किन्तु हकीकत यह है कि परमधाम में नन्दलाल श्री कृष्ण जी नहीं है। परमधाम में भी नन्दलाल का स्वरूप मानना भाई परमानन्द जी की अपनी व्यक्तिगत मान्यता है न कि श्री मुखवाणी की। इस आरती के उनके कथन श्री मुखवाणी के कथनों के अनुकूल नहीं है। जैसे पहली चौपाई में कहा गया है कि गौर श्याम मुख निखरन कीजे, प्रभु को स्वरूप नयन से पीजे। श्री मुख वाणी के आधार पर रात के श्रृंगार में तथा परमधाम के श्रृंगार में श्री राज जी का स्वरूप श्याम नहीं बल्कि गौर है।

मुख मेरे मेहबूब का, रंग अति उज्जल गुलाल।
क्यों कहूं सलूकी नाजुकी, नूर तजल्ली नूर जमाल।।

सिनगार

इस आरती में आगे कहा गया है कि फूलन की सेज, फूलन की गलमाला। रतन सिंहासन बैठे नंदलाला। लाला शब्द के दो अर्थ हैं १. प्रियतम २. पुत्र

वस्तुतः जब परमधाम में नन्द यशोदा ही नहीं हैं तो उनके लाल कहां से होंगे? नन्द और यशोदा जी गोलोक में हैं परमधाम में नहीं। पुनः आगे कहा गया है - मोर मुकुट कर मुरली सोहे। नटवर भेष, निरखि मन मोहे। यह सबको विदित है कि श्री कृष्ण जी ने केवल ब्रज में ही मोर मुकुट धारण किया था। रास और परमधाम में श्री राज जी के द्वारा धारण किया हुआ मुकुट अनेक प्रकार के अनमोल नगों से जड़ा हुआ है। श्री राज जी ने केवल ब्रज एवं रास में ही अपने हाथों में बांसुरी बजाई थी। परमधाम में वे कभी भी बांसुरी नहीं बजाते हैं। श्री राज जी ने केवल रास के समय में नटवर भेष धारण किया था परमधाम में नहीं।

तेवा भूखण ने तेवो वागों, नटवरानों लीधो वेख।
घणां दिवस रामत कीधीं, पण आज थासे वसेख।।

रास ११/६

'आरती करत सकल ब्रजनारी' का कथन तो इस समय अखण्ड गोलोक के लिए ही उचित है क्योंकि परमधाम में न तो ब्रज है आ न ही ब्रजनारियां। नन्द नन्दन वृषभानु किशोरी भी युगल स्वरूप श्री राज श्यामा जी के लिए नहीं कहा जा सकता।

पूर्ण ब्रह्म अब ब्रजलीला में नहीं है -

संध्या के समय गाई जाने वाली गौरी में एक गौरी इस प्रकार है-

आवत धेनु चराये वन से, आवत धेनु चराये।
कनक आरती साज यशोमति, मोतिन थाल भराये।
दास मुकुन्द को राज मिला है, ज्यों निर्धन धन पाये।।

इस गौरी को पढ़कर हमें अपने मन में यह धारणा नहीं बना लेनी चाहिए कि ब्रज लीला में अभी भी श्री राजजी का स्वरूप है। परमधाम मे गो चराने की लीला न होती है न कभी होगी वह यशोदा जी भी नहीं है जब तक श्री कृष्ण जी के तन में श्री राज जी का जोश रहा, तभी तक वह तन हमारे लिए इष्ट रहा। ७ दिन तक तो गोलोकी श्री कृष्ण जी ने भी गो चराने की लीला की तो क्या हम उन्हें भी श्री राज जी का स्वरूप मानें? सबलिक में अखण्ड होने वाली ब्रज की लीला में अभी भी श्री कृष्ण जी गाय चराने की लीला कर रहे हैं और अनादि काल तक करते रहेंगे तो परमध

Nijanand App

ाम के मूल मिलावे का ध्यान छोड़कर सबलिक में स्थित ब्रजलीला का ध्यान करना ही क्या हमारा पतिव्रता साधन है? श्री मुख वाणी की कसौटी पर पूरा उतरे बिना कोई भी विचारधारा मान्य नहीं हो सकती है।

हम ही खेले बृजरास में, हम ही आए इत।
घरों बैठे हम देखाहीं, एही तमासा तित।।

कलस हिन्दुस्तानी २०/२७

ब्रज एवं रास में हमने ही लीला की थी तथा इस जागनी के ब्रह्माण्ड में भी हम ही अपनी सुरता के माध्यम से आए हुए हैं। अपने मूल घर परमधाम में बैठे ही हम अपनी परआतम के तनों से यहां की सारी लीला देख रहे हैं। अर्थात अब हम ब्रज एव रास की अखण्ड लीलाओं में नहीं हैं। श्रीमद्भागवत गीता के अध्याय १५/६ में कहा गया है कि

न तद्भासयते सूर्यो न शंशाको न पावकः।
यद् गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम्।।

उस परम पद को न तो सूर्य प्रकाशित कर सकता है, न चन्द्रमा और न अग्नि। जिसको प्राप्त होने वाले प्राणी पुनः इस जगत में लौटते नही है, वह मेरा (विष्णु स्वरूप योगेश्वर श्री कृष्ण का) परमधाम है।

इस श्लोक से स्पष्ट रूप से योगमाया के ब्रह्माण्ड को ही योगेश्वर श्री कृष्ण जी का परमधाम कहा गया है, जो गीता के ८/२१ (अव्यक्तोऽक्षर इत्युक्तस्तमाहुः परमांगतिम) से भी सिद्ध होता है।

किन्तु श्री मुकुन्द दास जी ने गीता के १५/६ श्लोक के भावार्थ को जैसा का तैसा चौपाई के रूप में लिखा है और उसे परमधाम के लिए माना है।

चांद सूरज की गम नहीं, नहीं पावक को काम।
पहुंचे सो आवे नहीं, सोई मुकुन्द निजधाम।।

वस्तुतः रूहों का निजधाम तो योगमाया से परे एकमात्र परमधाम ही है, जहां के स्वलीला अद्वैत वाहेदत में किसी भी प्रकार की घट बढ़ नहीं हो सकती है -

वाहेदत अर्स अखंड, असल नकल नहीं दोए।
घट बढ़ अर्स में है नहीं, न नया पुराना होए।।

सिनगार ३/३६

श्री मुख वाणी के कथन के आधार पर कालमाया के किसी भी जीव को न तो परमधाम में ले जाया जा सकता है और न वहां की रूहों की संख्या में से कोई कमी ही की जा सकती है। अतः "पहुंचे सो आवे नहीं" का कथन योगमाया के ब्रह्माण्ड के लिए ही है, परमधाम के लिए नहीं।

और कोई अर्स अजीम में, पोहोंच न सकत।
जित हक हादी रूहें, महंमद तीन सुरत।।

मारफत सागर १७/४१

हमारे धनी कौन हैं - श्री कृष्ण या श्री प्राणनाथ जी?

यद्यपि भाई परमानन्द जी ने अपनी बनाई हुयी परिकरमा में लिखा है कि -"धामधनी श्री कृष्ण हमारे"। तथा जीवन मस्तान जी ने भी अपने पंचको में कहा है कि -

पर जरा मरन ते छोड़नहारा, एक कन्हैया लाल है।
जाके भजन किये से यारों, छूटत यम के जाल हैं।

Nijanand App

किन्तु यदि हम श्री मुखवाणी तथा श्री बीतक साहेब के अनुसार इन पूर्वोक्त कथनों पर विचार करें, तो निष्कर्ष इसके विपरीत ही होता है।

श्री मुखवाणी तथा श्री बीतक साहेब के अतिरिक्त अन्य सभी ग्रन्थों में कन्हैया शब्द का प्रयोग केवल ब्रज एवं रास के श्री कृष्ण के लिए किया गया है और श्री कृष्ण हमारे इष्ट नहीं हैं, क्योंकि हमारा मूल घर परमधाम है न कि योगमाया। हमारी परमआतम मूल स्वरूप राजजी के चरणों में बैठी हैं न कि ब्रज एवं रास के श्री कृष्ण जी के चरणों में। ब्रज एवं रास के श्री कृष्ण के प्रति प्रेम होने से जीव तो अवश्य ही जन्म-मरण के चक्र से छूट जायेगा किन्तु परमधाम की आत्माओं को उनका निजसुख नहीं मिल सकता है।

एहनें सरणें वैष्णवे, जिहां बिध बिधना विलास।
हवे नेहेचल रंग कीजे ते पुरुख सों, दई प्रेम नों पास।।

किरंतन ६४/८

श्री वल्लभाचार्य जी ने वैष्णवों को इन श्री कृष्ण जी की शरण में जाने को कहा है, जहां तरह-तरह के विलास की लीला हो रही है। वैष्णवों को उन अखण्ड स्वरूप वाले श्री कृष्ण जी से प्रेम करके शाश्वत आनन्द प्राप्त करना चाहिए।

ब्रज की लीला में अक्षर ब्रह्म की आत्मा पूर्णतया फरामोशी में रही। रास की लीला में उन्हें आधी नींद और आधी जागृति रही। जब वही स्वरूप अरब में आया तो उन्हें दूज का चांद से उपमा दी गई। सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी को पूर्णमासी का चन्द्रमा तथा श्री प्राणनाथ जी को मारफत का सूर्य कहा गया है।

दसमी के सवा नव बरस, ता दिन पैदा सरूप सरस।
पीछे जो तीसरा हुआ तमाम, वह चांद ए सूरज आखिरी इमाम।।

बड़ा कयामतनामा १२/४

दसमी सदी में जब सवा नौ वर्ष बाकी थे अर्थात सम्वत् १६३८ में श्यामा जी श्री देवचन्द्र जी के अन्दर प्रगटीं। उसके बाद हकी सूरत इमाम मेहंदी जाहिर हुए। कुरान में मलकी सूरत को चन्द्रमा तथा हकी सूरत को सूर्य कहा गया है।

तीन लीला माया मिले, हम प्रेमें विलसी जेह।
ए लीला चौथी विलसते, अति अधिक जानी एह।।

कलस हिन्दुस्तानी २३/७४

ब्रज, रास एवं सदगुरु धनी श्री देवचन्द्र जी के तन से होने वाली लीला का हमने फरामोशी में प्रेम से आनन्द लिया। जागनी के इस ब्रह्माण्ड में भी श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप से होने वाली लीला को हमने विलसते समय सबसे बड़ी जाना।

एक सुख सुपन के, दूजे जागते ज्यों होए।
तीन लीला पेहेले ऐ चौथी, फरक एता इन दोए।।

कलस हिन्दुस्तानी २३/७५

एक सुख सपने का होता है, जो यथार्थ में नही होता है। दूसरे प्रकार का सुख जाग्रत अवस्था का होता है, ब्रज-रास एवं श्री देवचन्द्र जी के तन से होने वाली लीला सपने की तरह है तीसरा श्री प्राणनाथ जी की लीला परमधाम के प्रत्यक्ष सुखों की है।

अपनी सूरत देखी अर्स की, जो रूहें तले हक कदम।
जब सूर ऊग्या हक मारफत, तब सब आए तले हुकम।।

मारफत सागर १४/२६

Nijanand App

जब अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी के मारफत के ज्ञान रूपी सूर्य का उजाला हो गया, तो उन रूहों ने अपनी परआतम को देख लिया, जो श्री राजजी के चरणों तले मूल मिलावे में बैठी है तब सभी ईमाम मेहंदी श्री प्राणनाथ जी के हुक्म तले चलने भी लगे।

श्री प्राणनाथ जी श्री जी साहिब जी ही किस प्रकार अक्षरातीत है, यह बीतक साहेब के इन कथनों से स्पष्ट हो जाता है-

यह तो अछरातीत था, तुम ना करी पहिचान।
अब मै उतहीं जात हों, मुझे आया ईमान।।

बीतक साहिब ३३/२६

श्री केशवदास जी तीर्थ गुरू रेवादास से कहते है कि जिसकों आपने केवल एक क्षत्रिय ही समझा था, वे तो पूर्ण ब्रह्म अक्षरातीत के स्वरूप हैं। उनको तुम पहचान नहीं पाए। मुझे उन पर अटल ईमान है और अब मैं उनकी खोज में जा रहा हूँ।

नदी किलकिला तीर पे, उतरे परमहंस आए।
तिनमें सिरदार अछरातीत, देख अपना ठौर सुख पाए।।

बीतक साहिब ६०/१२

किलकिला नदी के किनारे ब्रह्ममुनियों का आगमन हुआ। जिनके सिरदार अक्षरातीत श्री प्राणनाथ, श्री जी साहेब जी है। उन्होने अपनी राजधानी के लिए जिस स्थान को परमधाम से ही निश्चित कर रखा था, उसे देख कर बहुत आनन्दित हुए।

एही अछरातीत हैं, एही हैं धनी धाम।
एही महंमद मेहंदी ईसा, एही पूरे मनोरथ काम।।

ये श्री प्राणनाथ जी ही धाम के धनी अक्षरातीत हैं। ये ही आखरूल जमां ईमाम मेहंदी, नूर महम्मद और आखिरी ईसा भी हैं ये ही सबकी इच्छाओं को पूर्ण करने वाले हैं। पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानन्द श्री प्राणनाथ जी सर्व समर्थ हैं। उनके प्रति जिसके दिल में जैसी भावना रही, वैसा ही स्वरूप धारण कर उनको दर्शन दिये तथा उनकी सम्पूर्ण कामनाओं को पूर्ण किया।

जाको दिल जिन भांत को, तासों मिले तिन विध।
मन चाह्य सरूप होए के, कारज किये सब सिध।।

खुलासा १३/६४

श्री मुखवाणी तथा श्री बीतक साहिब के इन कथनों को पढ़कर हमें अपनी अन्तरात्मा से ही यह पूछना चाहिए कि अक्षरातीत श्री प्राणनाथ श्री जी साहिब जी को हमें अपना धनी मानना चाहिए या सबलिक के कृष्ण कन्हैया लाल को।

Nijanand App